

अध्याय 7

रसोई

प्रश्न-अभ्यास

कुछ और काम

मैं चाकू हूँ।

मैं सब्जी-फल काटता हूँ।



हम चकला बेलन हैं।

हम रांटी बेलते हैं।

मैं छलनी हूँ।

मैं चाय छानती हूँ।



मैं थाली हूँ।

मुझमें खाना खाओ।

मैं छीलनी हूँ।

मुझसे छिलका छीलो।



सही-गलत

प्रश्न 1.

रसोईघर का चित्र देखो और बताओ।



उत्तर :

1. पतीला चूल्हे के नीचे है। x
2. चूहा अँगीठी के अंदर है। ✓
3. टोकरी में आम रखे हैं। x
4. अक्षय चावल बीन रहा है। ✓
5. माँ खाना बना रही हैं। ✓
6. आले में लालटेन रखी है। ✓
7. दादी किताब पढ़ रही हैं। ✓
8. सुहानी खिड़की से झाँक रही है। ✓

काम ही काम

प्रश्न 2.

यहाँ क्या काम हो रहा है? गोला लगाओ।

सेंकना

बेलना

तलना

उत्तर—

तलना



किनसे काटोगे?



चाकू



सिल-बट्टा



छीलनी



पहँसुल



दाव



कैंची



हथौड़ा



गुलेल



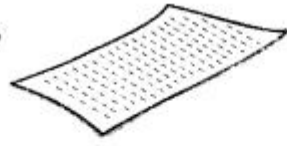
ढक्कन



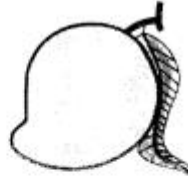
प्रश्न 3.
किससे क्या काटोगे?



कपड़ा



कागज़



आम



बैंगन



रस्सी



सेब



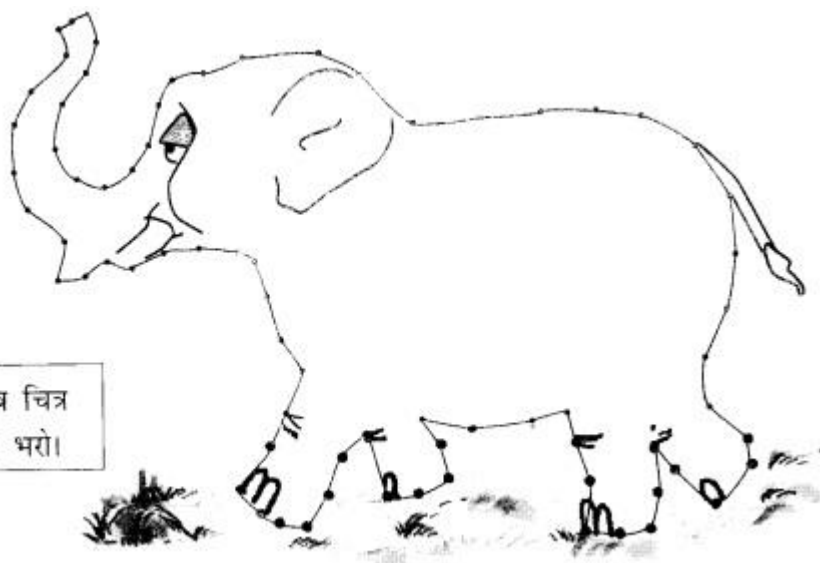
गन्ना

उत्तर :

कैंची से	चाकू से
कपड़ा	आम
कागज़	बैंगन
	रस्सी
	सेब
	गन्ना

प्रश्न 4.
बिंदु जोड़कर चित्र पूरा करो।

उत्तर :



शाबाश! अब चित्र
में कोई रंग भरो।

विद्यार्थी स्वयं रंग भरें।

कविता का सारांश

‘रसोईघर’ मधु पंत द्वारा लिखित एक रोचक कविता है। इस कविता के माध्यम से कवयित्री बड़े ही रोचक शब्दों में रसोईघर की चीजों का वर्णन कर रही हैं। खेलते हुए मुन्ना मुन्नी जब रसोईघर की खिड़की को खोलकर देखते हैं तो पाते हैं कि अंदर चकला-बेलन, चाकू-छलनी आदि बातें कर रहे हैं। चाकू कहता है कि मैं फल और सब्जियाँ काटता हूँ और टुकड़े टुकड़े करके सभी को बाँटता हूँ। गाजर-मूली, प्याज-टमाटर आदि को मैं काटता तथा छीलता हूँ और लोग इसे सजाकर रखते हैं। थाली कहती है कि मेरा आकार गोल चौड़ा-सा है और मैं ताली की तरह बज भी सकती हूँ। मुझमें रोटी-सब्जी डालकर सब झटपट खाते हैं।

शब्दार्थ : चकला-पत्थर या काठ का गोल पाटा, जिस पर रोटी बेली जाती है। बेलन-काठ का लंबा दस्ता, जो रोटी आदि बेलने के काम आता है।

प्रसंग : उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक रिमझिम, भाग-1 में संकलित कविता ‘रसोईघर’ से ली गई हैं। इस कविता की कवयित्री मधु पंत हैं। इसमें रसोईघर में प्रयोग में लाई जानेवाली चीजों के महत्व के विषय में बताया गया है।

व्याख्या : आज जब मुन्ना-मुन्नी ने रसोईघर की खिड़की खोली तो अंदर देखा कि चकला-बेलन, चाकू-छलनी इत्यादि आपस में बातचीत कर रहे हैं। चाकू कह रही है कि मैं फल-सब्जी आदि को टुकड़ा-टुकड़ा करके सबको बाँटता हूँ। मैं गाजर-मूली, प्याज-टमाटर आदि को काटता तथा छीलता हूँ और लोग इसे सजाकर रखते हैं।